शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 04 अंक– 13 जनवरी - मार्च - 2026 Impact factor– 4.5

छापा कला में भारतीय महिला छापाकारों का योगदान

आशुतोष त्रिपाठी
शोधार्थी
ड्राइंग और पेंटिंग विभाग
के.आर.जी. कॉलेज, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, (मध्य प्रदेश)

(प्रो.) डॉ. जया जैन
शोध निर्देशिका
विभागाध्यक्ष- ड्राइंग और पेंटिंग विभाग,
के.आर.जी. कॉलेज, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, (मध्य प्रदेश)

सारांश - छापा कला, जिसे प्रिंटमेकिंग या ग्राफिक आर्ट के रूप में जाना जाता है, कला के इतिहास में यह एक लोकतांत्रिक और बहुआयामी माध्यम रही है। इस शोध पत्र में छापा कला के क्षेत्र में महिला छापाकारों के योगदान का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें वैश्विक और भारतीय संदर्भ दोनों शामिल हैं। छापा कला की उत्पत्ति चीन से हुई और यूरोप में 15वीं शताब्दी में विकसित हुई, लेकिन महिलाओं की भागीदारी 18वीं शताब्दी से उल्लेखनीय रूप से बढ़ी, जहां इसे सामाजिक रूप से स्वीकार्य माध्यम माना गया। वैश्विक स्तर पर कैथे कोल्विट्ज जैसी कलाकारों ने युद्ध, गरीबी और मातृत्व जैसे सामाजिक मुद्दों पर अपनी छाप छोड़ी, जबकि भारतीय संदर्भ में अनुपम सूद, जरिना हाशमी, देवयानी कृष्णा और नैना दलाल जैसी छापाकारों ने लिंग, प्रवास, पहचान और दैनिक जीवन की संवेदनाओं को उकेरा। यह पत्र ऐतिहासिक विकास, प्रमुख कलाकारों के जीवन और कार्यों, तकनीकी नवाचारों, चुनौतियों तथा समकालीन प्रभाव का परीक्षण करता है। महिलाओं ने छापा कला को न केवल तकनीकी रूप से समृद्ध किया बल्कि इसे नारीवादी विमर्श, सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत अनुभवों का वाहक बनाया। छापा कला की बहुलता (मल्टीपल एडिशन) ने इन कलाकारों को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने में सक्षम बनाया, जिससे कला लोकतंत्रीकरण हुआ। भारतीय संदर्भ में 'नभ स्पर्श: भारतीय महिला छापाकार' जैसी प्रदर्शनियां इस योगदान को उजागर करती हैं, जिसमें लगभग 150 महिला कलाकारों के कार्य शामिल हैं। शोध से स्पष्ट होता है कि महिलाओं ने पुरुष-प्रधान कार्यशालाओं और सामाजिक बाधाओं के बावजूद छापा कला को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। उनके कार्यों में शरीर की संवेदनशीलता, घर की अवधारणा, विभाजन की पीड़ा और पर्यावरणीय चेतना प्रमुख हैं। निष्कर्षतः, महिला छापाकारों का योगदान न केवल कला इतिहास को समृद्ध करता है बल्कि समकालीन समाज में लिंग समानता और सांस्कृतिक संवाद को मजबूत करता है। यह शोध मौलिक है क्योंकि इसमें उपलब्ध स्रोतों का संश्लेषण कर नए विश्लेषणात्मक ढांचे प्रस्तुत किए गए हैं, जो भविष्य के अध्ययनों के लिए आधार प्रदान करेगा।

बीज शब्द- छापा कला, महिला छापाकार, अनुपम सूद, जरिना हाशमी, कैथे कोल्विट्ज, भारतीय आधुनिक कला, नारीवादी विमर्श, इंटाग्लियो प्रिंटिंग, प्रवास और पहचान, सामाजिक टिप्पणी, नभ स्पर्श प्रदर्शनी।

परिचय- छापा कला मानव सभ्यता की सबसे पुरानी और प्रभावशाली कला विधाओं में से एक है। यह लकड़ी की ब्लॉक प्रिंटिंग से शुरू होकर इंटाग्लियो, लिथोग्राफी, वुडकट, एक्वाटिंट और डिजिटल हाइब्रिड तक विकसित हुई। छापा कला का मुख्य आकर्षण इसकी पुनरुत्पादकता है, जो एक कलाकृति को कई प्रतियों में उपलब्ध कराती है और इसे लोकतांत्रिक बनाती है। लेकिन लंबे समय तक इसे चित्रकला की तुलना में 'दूसरी श्रेणी' का माध्यम माना जाता रहा। इस माध्यम में महिलाओं का प्रवेश और योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनकी रचनात्मकता, संघर्ष और सामाजिक जागरूकता को प्रतिबिंबित करता है।भारतीय संदर्भ में छापा कला १६वीं शताब्दी में पुर्तगाली मिशनरियों के साथ आई और १८वीं-१९वीं शताब्दी में प्रेसिडेंसी शहरों में लोकप्रिय हुई। २०वीं शताब्दी के मध्य में कला संस्थानों जैसे दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट और बड़ौदा के एमएसयू में इसका विकास हुआ। महिलाओं ने इस विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, खासकर जब पारंपरिक चित्रकला में उनकी पहुंच सीमित थी। यह शोध पत्र छापा कला में महिला छापाकारों के योगदान को वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य में जांचता है। उद्देश्य है मौलिक विश्लेषण प्रस्तुत करना, जिसमें ऐतिहासिक तथ्यों, कलाकारों के कार्यों और सामाजिक प्रभाव का संश्लेषण शामिल है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और वैश्विक संदर्भ- छापा कला की शुरुआत में महिलाओं की भूमिका सीमित थी, लेकिन १८वीं शताब्दी से यह बदलने लगी। यूरोप में कुलीन वर्ग की महिलाओं के लिए छापा कला सामाजिक रूप से स्वीकार्य थी क्योंकि यह घरेलू वातावरण में की जा सकती थी। क्वीन विक्टोरिया ने परिवार के चित्रों की एचिंग बनाई, जबकि मैडम डी पॉम्पादोर ने उत्कृष्ट एनग्रेविंग की। एलिजाबेथ ब्लैकवेल की 'ए क्यूरियस हर्बल' (१७३७) जैसे कार्यों ने वैज्ञानिक चित्रण में योगदान दिया।

१९वीं-२०वीं शताब्दी में महिलाओं ने छापा कला को सामाजिक टिप्पणी का माध्यम बनाया। जर्मन कलाकार कैथे कोल्विट्ज (१८६७-१९४५) इस क्षेत्र की सबसे प्रमुख हस्ती हैं उन्होंने लिथोग्राफी, एचिंग और वुडकट का उपयोग कर युद्ध, गरीबी और मातृत्व की पीड़ा को चित्रित किया। उनके 'वीवर्स रिवोल्ट' (१८९३-९७) और 'वार' (१९२२-२३) चक्रों में महिलाएं विद्रोह और संघर्ष की प्रतीक हैं। कोल्विट्ज प्रूशियन एकेडमी ऑफ आर्ट्स की पहली महिला सदस्य बनीं, लेकिन नाजी शासन में उनके कार्यों पर प्रतिबंध लगा। उनके छापों ने जन-आंदोलनों को प्रेरित किया क्योंकि ये सस्ते और बहुल थे. अमेरिका में प्रोविंसटाउन वुडकट ग्रुप और WPA (वर्क्स प्रोग्रेस एडमिनिस्ट्रेशन) की महिलाओं ने व्हाइट-लाइन वुडकट और सोशल रियलिज्म विकसित किया। १९४० के दशक में एटेलियर १७ (पेरिस/न्यूयॉर्क) में महिलाओं ने अमूर्त छापा कला में क्रांति लाई। लुईस नेवेलसन जैसी कलाकारों ने प्लेट पर 'गंदगी' छोड़कर पारंपरिक स्वच्छता की अवधारणा को चुनौती दी। इन योगदानों ने छापा कला को तकनीकी और विषयगत रूप से समृद्ध किया, जहां महिलाओं ने लिंग भूमिकाओं को तोड़ा।

भारतीय छापा कला में महिला छापाकारों का विकास भारत में छापा कला का आधुनिकीकरण २०वीं शताब्दी के मध्य में हुआ। प्रारंभिक महिला छापाकारों में देवयानी कृष्णा (१९१०-२०००) प्रमुख हैं,

जिन्होंने अमूर्त एचिंग और इंटाग्लियो में योगदान दिया। १९६०-७० के दशक में दिल्ली और बड़ौदा की कला संस्थाओं ने महिलाओं को प्रशिक्षण दिया। गरही स्टूडियो जैसी साझा कार्यशालाएं महत्वपूर्ण रहीं, जहां महिलाओं ने प्रेस साझा कर काम किया।

'नभ स्पर्श: भारतीय महिला छापाकार' (एनजीएमए, २०२४) प्रदर्शनी ने लगभग १५० महिला छापाकारों के कार्यों को एक मंच दिया इसमें वरिष्ठ और समकालीन दोनों शामिल हैं। यह प्रदर्शनी छापा कला की श्रमसाध्य प्रकृति को रेखांकित करती है – भारी प्रेस, एसिड का उपयोग और साझा संसाधन। महिलाओं ने इसे अपनी संवेदनशीलता से भर दिया।

प्रमुख भारतीय महिला छापाकार और उनके योगदान अनुपम सूद (जन्म १९४४) भारतीय छापा कला की अग्रणी हैं। पंजाब के होशियारपुर में जन्मी सूद ने दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट से शिक्षा ली और १९७१ में ब्रिटिश काउंसिल स्कॉलरशिप पर स्लेड स्कूल ऑफ फाइन आर्ट्स, लंदन में उन्नत इंटाग्लियो तकनीक सीखी। १९७७ से २००३ तक उन्होंने अपनी अल्मा मेटर में पढ़ाया। उनके कार्यों में मानव शरीर की जटिलता प्रमुख है – 'पर्सोना' (१९८८) जैसे एचिंग और एक्वाटिंट में वे महिलाओं की कमजोरी और शक्ति दोनों को दर्शाती हैं । उनके पिता के बॉडीबिल्डिंग प्रेम और थिएटर प्रभाव से प्रेरित होकर उन्होंने शरीर को बहुस्तरीय प्रतीक बनाया। सूद ने छापा कला को भारत में मुख्यधारा का माध्यम बनाया और छात्रों को प्रेरित किया। उनके कार्य विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूजियम, एनजीएमए और जापान के फुकुओका म्यूजियम में संग्रहीत हैं। जरिना हाशमी (१९३७-२०२०), जिन्हें जरिना के नाम से जाना जाता है, अलिगढ़ में जन्मीं। गणित की डिग्री के बाद उन्होंने बैंकॉक, पेरिस (एटेलियर १७) और टोक्यो में छापा सीखा। उनकी वुडब्लॉक और इंटाग्लियो छापों में घर, प्रवास और विभाजन की पीड़ा है। 'होम इज ए फॉरेन प्लेस' श्रृंखला और 'डिवाइडिंग लाइन' (२००१) में रेडक्लिफ लाइन की हिंसा को न्यूनतम रेखाओं से उकेरा गया। उर्दू लिपि और ज्यामितीय रूप उनके कार्यों में सांस्कृतिक पहचान को जोड़ते हैं। जरिना ने नारीवादी कला संस्थानों में काम किया और न्यूयॉर्क फेमिनिस्ट आर्ट इंस्टीट्यूट की बोर्ड सदस्य रहीं। उनके कार्यों ने वैश्विक प्रवासी अनुभव को छापा कला में स्थापित किया ।

अन्य उल्लेखनीय कलाकार: · नैना दलाल: दैनिक जीवन की महिलाओं पर लिथोग्राफी और कोलाग्राफी। उन्होंने 'वुमन एंड प्रिंटमेकिंग इन इंडिया' निबंध लिखा। रिनी धुमाल (१९४८-२०२१): भारतीय लोक और आधुनिकता का मेल, रियलिज्म आधारित। · गोगी सरोज पाल: एचिंग और लिथोग्राफी में स्त्रीत्व की संवेदना, मातृत्व और कलाकार जीवन के पत्र। · कंचन चंदर: सेमी-अब्स्ट्रैक्ट लिथोग्राफी। ये कलाकारों ने छापा को व्यक्तिगत इतिहास का दस्तावेज बनाया।

विषयवस्तु, तकनीकी नवाचार और नारीवादी परिप्रेक्ष्य- महिला छापाकारों ने विषयवस्तु में नारी शरीर, घरेलू क्षेत्र, लिंग असमानता और सामाजिक न्याय को केंद्र में रखा। सूद की रचनाएं शरीर को 'इतिहास का भंडार' मानती हैं, जबकि जरिना की छापें 'घर' को राजनीतिक अवधारणा बनाती हैं। कोल्विट्ज ने मातृत्व को विद्रोह का प्रतीक बनाया। तकनीकी रूप से उन्होंने इंटाग्लियो (जिंक प्लेट, एसिड बाइटिंग), वुडकट (रिदमिक पॉजिटिव-नेगेटिव स्पेस) और लिथोग्राफी में महारत हासिल की। भारत में साझा स्टूडियो ने सहयोग बढ़ाया। नारीवादी दृष्टि से 'व्यक्तिगत ही राजनीतिक है' – उनके कार्यों ने घरेलू श्रम, शरीर की स्वायत्तता और प्रवास की पीड़ा को उजागर किया। छापों की बहुलता ने इन मुद्दों को जन-जन तक पहुंचाया।

चुनौतियां और समग्र प्रभाव- चुनौतियां अनेक थीं: भारी प्रेस संचालन, एसिड का खतरा, पुरुष-प्रधान कार्यशालाएं और समाज की अपेक्षाएं। भारत में महिलाओं को पहले प्रशिक्षण सीमित था। फिर भी उन्होंने स्टूडियो स्थापित किए, पढ़ाया और प्रदर्शनियां आयोजित कीं। प्रभाव: छापा कला को मुख्यधारा में लाया, नई पीढ़ी को प्रेरित किया और सांस्कृतिक संवाद बढ़ाया। समकालीन समय में डिजिटल-हाइब्रिड छापे महिलाओं द्वारा पर्यावरण और डिजिटल लिंग मुद्दों पर नए कार्य कर रहे हैं।

निष्कर्ष- छापा कला में महिला छापाकारों का योगदान अपरिहार्य है। उन्होंने माध्यम को तकनीकी, विषयगत और सामाजिक रूप से परिवर्तित किया। वैश्विक स्तर पर कोल्विट्ज ने सामाजिक न्याय का मार्ग प्रशस्त किया, जबकि भारत में सूद और हाशमी ने सांस्कृतिक पहचान और लिंग विमर्श को समृद्ध किया। 'नभ स्पर्श' जैसी पहलों ने इस विरासत को संरक्षित किया। भविष्य में महिलाएं डिजिटल और पारंपरिक का मेल कर नई दिशाएं तय करेंगी। यह योगदान न केवल कला इतिहास का हिस्सा है बल्कि समानता की लड़ाई का प्रतीक भी। शोध से स्पष्ट है कि महिलाओं ने छापा कला को अपनी आवाज दी और दुनिया को देखने का नया तरीका सिखाया।

****

संदर्भ सूची :-

1. "Anupam Sud." *Wikipedia*, Wikimedia Foundation, 12 Apr. 2026, en.wikipedia.org/wiki/Anupam_Sud.
2. "Indian Women Printmakers Take Centre Stage at NGMA's Landmark Show." *The Federal*, 5 Sept. 2024, thefederal.com/category/features/indian-women-printmakers-take-centre-stage-at-ngmas-landmark-show-in-delhi-143146.
3. *Käthe Kollwitz*. National Museum of Women in the Arts, nmwa.org/art/artists/kathe-kollwitz/. Accessed 12 Apr. 2026.
4. *Nabh Sparsh: Indian Women Printmakers*. Exhibition catalogue, National Gallery of Modern Art, New Delhi, 2024.
5. "Naina Dalal." Gallerie Splash, www.galleriesplash.com/artists/246/Naina-Dalal. Accessed 12 Apr. 2026.
6. Sengupta, P., editor. *The Printed Picture: Four Centuries of Indian Printmaking*. Exhibition catalogue, Asia Society, 2012.
7. "Zarina (Artist)." *Wikipedia*, Wikimedia Foundation, 12 Apr. 2026, en.wikipedia.org/wiki/Zarina_(artist).
8. Zarina. *Home Is a Foreign Place*. 1999. The Metropolitan Museum of Art, New York, www.metmuseum.org/essays/in-memoriam-zarina-hashmi. Accessed 12 Apr. 2026.